साहित्यकार डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत के साहित्य में नारी – अभिव्यक्ति के विविध आयाम

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

हिन्दी में पीएच.डी. उपाधि हेतू
शोध प्रस्ताव

शोध निर्देशक
JV'n डॉ. चित्रा

शोधार्थी
JV'n शिल्पा देवी
(JVR-1/18/10021)

हिन्दी विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान – 2

साहित्यकार डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत का व्यक्तित्व

मनुष्य का व्यक्तित्व ही उसका अस्तित्व माना जाता है। व्यक्तित्व, मानव के व्यवहार तथा कार्यशैली को प्रभावित करता है, व्यक्तित्व, व्यक्ति की बौद्धिक भावात्मक, चरित्रात्मक, व्यक्ति की शारीरिक तथा सामाजिक विशेषताओं का समूह है।

इसी प्रकार साहित्य सृजन में कर्ता के व्यक्तित्व की झलक, उसके कृतित्व में स्पष्ट रुप से दिखाई देती है।

वुडवर्थ के अनुसार–व्यक्तित्व व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहार की विशेषता है जिसका प्रदर्शन उसके विचाारों की आदत व्यक्त करने का ढंग एवं जीवन के प्रति उसकी दार्शनिक विचारधारा के रुप में किया जाता है।

व्यक्तित्व

आधुनिक मनोविज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण एंव प्रमुख विषय है। व्यक्ति के अध्ययन के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का पूर्वकथन भी किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेष गुण या विशेषताएं होती हैं, जो दूसरे व्यक्ति में नहीं होती। इन्हीं गुणों एवं विशेषताओं के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्ति के इन्हीं गुणों का समुच्चय ही व्यक्तित्त्व कहलाता है।

जनसाधारण में व्यक्तित्त्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्म रुप से लिया जाता है, परंतु मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के गुणों की समष्टि से है, अर्थात् व्यक्ति के बाह्म आवरण के गुण और आंतरिक तत्व, दोनों को माना जाता है।

डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत हिन्दीजगत् में प्रतिष्ठित, संस्कृत एवं हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्य सर्जक हैं इनका व्यक्तित्व साहित्यकारों, विद्याविशारदों/शिक्षार्थियों के लिए विश्वसनीयता का द्योतक है। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, पंजाबी, पहाड़ी और डोगरी की समस्त विधाओं में समान अधिकार से दख़ल रखने वाले इस व्यक्तित्व में, उच्च शिक्षा, मृदुल व्यवहार और स्पृहणीय उन्नत सोच का प्रशंसनीय योग है।

डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत हिन्दीजगत् में प्रतिष्ठित, संस्कृत एवं हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्य सर्जक हैं इनका व्यक्तित्व साहित्यकारों, विद्याविशारदों/शिक्षार्थियों के लिए विश्वसनीयता का द्योतक है। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, पंजाबी, पहाड़ी और डोगरी की समस्त विधाओं में समान अधिकार से दख़ल रखने वाले इस व्यक्तित्व में, उच्च शिक्षा, मृदुल व्यवहार और स्पृहणीय उन्नत सोच का प्रशंसनीय योग है।

डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत हिन्दीजगत् में प्रतिष्ठित, संस्कृत एवं हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्य सर्जक हैं इनका व्यक्तित्व साहित्यकारों, विद्याविशारदों/शिक्षार्थियों के लिए विश्वसनीयता का द्योतक है। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, पंजाबी, पहाड़ी और डोगरी की समस्त विधाओं में समान अधिकार से दख़ल रखने वाले इस व्यक्तित्व में, उच्च शिक्षा, मृदुल व्यवहार और स्पृहणीय उन्नत सोच का प्रशंसनीय योग है।

साहित्यकार डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत का कृतित्व

साहित्यकार डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत, समकालीन हिन्दी– लेखन में एक प्रतिष्ठित नाम है। इन्होंने साहित्य में नाटक, कहानी, कविता, निबन्ध, समीक्षा प्रायः सभी विधाओं में लेखन किया है। भारत की लगभग सभी पत्र–पत्रिकाओं में डॉ. सारस्वत का साहित्य प्रकाशित हुआ है। सन् 1962 से मुम्बई के प्रसिद्ध पत्र 'वेंकटेश्वर समाचार' एवं अनेक पत्र–पत्रिकाओं मधुमती (राजस्थान) 'साहित्य परिक्रमा (ग्वालियर)' 'साहित्य–अमृत (वाराणसी)' दिल्ली (दिल्ली) आजकल–(दिल्ली), 'हिन्दी अकादमी दिल्ली की पत्रिका' डुमडुमी (मित्रमण्डली) तरुण समाज भरतपुर), शैलशूत्र (उत्तराखण्ड), भाषा संस्कृति कला अकादमी शिमला की सोमसी पत्रिका, 'हिमभारती', भाषा विभाग की विपाशा, हिमाचल के लोकसम्पर्क विभाग की पत्रिका **'हिमप्रस्थ',** गिरिराज, कांगड़ा साहित्य परिषद की हिमसुमन, दिल्ली संस्कृत अकादमी की संस्कृत–मंजरी 'कल्याणी' सोलन, हिमाचल प्रदेश की, 'गीता से जुड़ें' जयपुर, कादम्बिनी–(दिल्ली)', सरस्वती सुमन' देहरादून की, साहित्य–अमृत, दिल्ली/ वाराणसी, व्यंग्य–यात्रा, (पश्चिम विहार नई दिल्ली) तथा दिल्ली की दिल्ली आदि पत्रिकाओं में लेखन की प्रामाणिक सामग्री की जानकारी उपलब्ध है। डॉ. सारस्वत की दृष्टि समसामयिकता के साथ भारत की प्राचीन संस्कृति और उनके गौरव को भी समेटती हुई एक तथ्यपूर्ण विचार और सोच को अग्रसारित करती है। साहित्यकार ने न केवल कविता से ही भारतीय भाव–धारा की समृद्धि की है, अपितु अपने नाटकों व्यंग्य–निबन्धों एवं समीक्षा–दृष्टि से भी पर्यालोचन कर एक स्वस्थ सामाजिक दर्शन को प्रस्तुत किया है। साहित्यकार की यह व्यापक सोच का ही परिणाम है कि उन्होंने समकालीन सरोकारों तथा भारतीय समाज की समस्याओं एवं तथताओं, और उपलब्धियों को यथोचित परिप्रेक्ष्यों में विवेचित किया है। हमारे साहित्यकार के पास एक समन्वित विचारों की स्पष्टता है, जो एक लेखक के पास होनी चाहिए।

डॉ. सारस्वत ने वर्तमान परिदृश्य और व्यतीत का एक सारगर्भित आकलन करके लेखन में एक स्वस्थ–चिंतन को आगे बढ़ाया है। हमारे इस साहित्यकार की इसी व्यापक सोच और दृष्टि को सामने रखते हुए, मैंने इन पर शोध करने का

निर्णय किया है। हमारे साहित्यकार ने चूंकि हिन्दी साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में लेखन किया है। डॉ. सारस्वत ने नारी के विभिन्न आयामों का वर्णन किया है। इन्होंने अपनी अनेक विधाओं में नारी को समाज का मूल्यवान अंग माना है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या साहित्यिक क्षेत्र, सुधारवादी नारी के रूप में नारी ने हमेशा ही अपना अस्तित्व बनाया है तथा समाज के सभी दायरों को, कुरीतियों को पार किया है। डॉ. सारस्वत के साहित्य में हमें नारी अभिव्यक्ति के विविध आयाम देखने को मिलते हैं। नारी समाज का एक महत्वपूर्ण घटक है। इस दृष्टि से मैंने अपने शोध का विषय इनके साहित्य में नारी अभिव्यक्ति के विविध आयामों को लेकर समीक्षात्मक प्रबन्ध लिखने का निश्चय किया।

शोध विषय का अवगमन

डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत के साहित्य के सम्बंध में सबसे पहले यह स्पष्ट कर दूं, कि वह समाज की किन्हीं एकपक्षीय समस्याओं को लेकर लिखने वाले साहित्यकार नहीं है। उनके लेखन में वर्तमान समय के साथ–साथ प्राचीन सांस्कृतिक चेतना, मूल्यों का सदाचरण, सत्यता, कर्त्तव्यनिष्ठता तथा वचनबद्धता की उस गरिमामय, गौरवशाली, परिपाटी का भी आकलन है जो हमारे जीवन और साहित्य को समृद्ध करती है। जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह एक श्रेष्ठ व्यक्ति की तरह व्यवहार करे और कुछ श्रेष्ठ मूल्यों पर दृढ़ रहकर अन्य के लिए उदाहरण बने। गीता में ऐसी ही श्रेष्ठता पर ज़ोर दिया गया है, कि जो व्यक्ति श्रेष्ठता का आचरण करता है; अन्यों से अलग और उत्तम परिपाटी का अनुसरण करता है, वैसा ही उसके दूसरे साथी अनुचर अथवा सामान्य लोग भी वैसा ही अनुवर्त्तन करते हैं। साहित्यकार ओम्प्रकाश सारस्वत का साहित्य, अपने विभिन्न आयामों, घटनाओं, उदाहरणों, प्रमाणों से प्रतिपद दर्शाता है कि व्यक्ति को अपने जीवन में ऊंची सोच, सद्व्यवहार और मनुष्यता के प्रति अपने दायित्वों का बोध होना चाहिए, ताकि समाज में उसका सम्मानजनक स्थान बन सके। मनुष्यता की व्यापक हितकारी भावना व्यक्ति में सदा रहनी चाहिए ताकि मानवता का सत्पक्ष प्रसारित हो सके। यह संसार, मनुष्यता की सदवृत्ति से ही खुशहाल और सुखमय बनता है। ऐसी ही सुखद कामनाओं की अभिवृत्तियाँ डॉ. सारस्वत के साहित्य में उपलब्ध होती हैं। इनके साहित्य में एक सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि इनके साहित्य में इन्होंने एक हांधर्मी सोच को प्रस्तुत और अग्रसारित किया है। साहित्य के सत्पक्ष को प्रस्तुत करना हमारे साहित्यकार के लेखन का उद्देश्य है। जिसमें नारी की महती भूमिका है। समय की तासीर को समझते हुए उसका विश्लेषण करके एक नई दृष्टि अथवा उर्वर जमीन को खोजने का प्रयास रहा है। मनुष्य जीवन की यही एक उपलब्धि है कि वह असत् से सत् की ओर जाए, कुविचारों से सुविचारों की ओर बढ़े, और प्राणीमात्र की मंगल कामना हेतु अपने समय का उपयोग करे।

डॉ. सारस्वत ने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया है। इस दृष्टि से मैंने इनकके समग्र साहित्य पर ओम्प्रकाश सारस्वत के साहित्य में नारी अभिव्यक्ति

के विविध आयाम विषय को लेकर समीक्षात्मक प्रबन्ध लेखने का निश्चय किया। ताकि एक व्यापक दर्शन सम्पन्न साहित्यकार का मूल्यांकन और सोच सामने आ सके, नारी समाज का एक महत्वपूर्ण घटक है अतः इसे विविध समाध्मौं की दिशाओं का आकलन हो सके।

डॉ. सारस्वत के विविध–आयामी साहित्य में, भारतीय नारी की अनेक शक्तियों एवं उसकी क्षमताओं का उद्‌घाटन हुआ जिसका समेकित रूप में प्रस्तुतिकरण आवश्यक था, अतः इसी दृष्टि से मैंने नारी को समक्ष रखते हुए–इन साहित्यकार के साहित्य में नारी की उर्जाओं एवं उसकी योग्यताओं का प्रकाशन करने का निश्चय लिया है। विश्वास है, मैं अपने इस शोध कार्य द्वारा, भारतीय नारी में विविध रूपों, आयामों को पाठकों के सामने सोदाहरण समुपस्थित कर सकूंगी। चूंकि, साहित्यकार, सारस्वत पर, अभी तक ऐसा कोई कार्य भी नहीं हुआ है, अतः विश्वविद्यालय में किए जाने वाले इस शोध कार्य में यह कार्य नया भी रहेगा।

उद्देश्य

मैं जिस साहित्यकार पर शोध पर कार्य कर रही हूँ उन्होंने साहित्य की प्रायः कई विधाओं पर लेखन किया है। विधा और विविधता की दृष्टि से उनका साहित्य एक व्यापक अनुसंधान की अपेक्षा रखता है। मैं उनके सारे कार्य को मुख्यतः, नारी केन्द्रित कर, परिशीलित करुंगी। साहित्यकार का बहुत सारा चिन्तन, उसके साहित्य की दृष्टि और उसके पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। मनोविज्ञान कहता है कि व्यक्ति/साहित्यकार वास्तव में वही कुछ है, जितना कुछ वह अपने लेखन द्वारा अभिव्यक्त होता है। अतः उद्देश्य के अंतर्गत मैं नारी के माध्यम से उसके सभी विचारणीय पहलुओं पर प्रकाश डालूंगी। उसके गृह–गृहस्थी निर्माण तथा उसके व्यक्तित्व के द्वारा उसके परिवेश पर पड़े प्रभाव का भी आकलन करने का प्रयास करूंगी। नारी की बहुआयामी दृष्टि तथा उसकी अभिव्यक्तियों को समक्ष लाने का भी प्रयत्न करूंगी। चूंकि सारस्वत के साहित्य की सोच विविध–पक्षी है। अतः नारी के कई पहलू हमारे समक्ष प्रकाशित हो सकेंगे। मुझे भरोसा है कि ओम्प्रकाश सारस्वत के साहित्य में 'नारी अभिव्यक्ति के विविध आयाम' यह विषय साहित्य और चिन्तन के बहुत से संदर्भों/उद्देश्यों को समक्ष लाने में समर्थ रहेगा। ये संदर्भ संक्षेप में इस प्रकार कहे जा सकते हैं।

1. साहित्य में नारी का योगदान
2. राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में नारी का योगदान
3. नारी की सामाजिक सुधार एवं शिक्षा के क्षेत्र में भूमिका
4. नारी का सामाजिक, संरचना में सहभागिता।

संबंधित कार्य का सर्वेक्षण

हमारे आलोच्य साहित्यकार डॉ. ओम्प्रकाश के साहित्य पर इससे पूर्व भी शोध कार्य हुआ है, जिसमें इनके साहित्य की विविध विधाओं और पक्षों को समेटा गया है। इनके साहित्य पर **डॉ. पंकज कपूर** ने, उनकी कविता में व्यंग्य–विषय पर शोध कार्य करके हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से एम. फिल. की उपाधि प्राप्त की। इसी प्रकार **रामलाल भार्गव** ने इनके नाटकों पर शोध करके एम.फिल. की उपाधि प्राप्त की। जिनका विषय था, 'ओम्प्रकाश सारस्वत के नाटकों में सामाजिक बोध।' इसी प्रकार **डॉक्टर अनिल राकेशी प्रो. एवं प्रिंसिंपल**–सान्ध्य महाविद्यालय के निर्देशन में, इनकी कविताओं का 'आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर एम. फिल के लिए ममता कुमारी को एम.फिल. की उपाधि मिली। इसी प्रकार **विजय कुमार** ने हिमाचल विश्व विद्यालय से इनके ललित निबंधों में 'समाज और संस्कृति ' विषय पर एम. फिल के लिए शोध– कार्य किया। **तुकेश कुमार** ने इसी विश्व–विद्यालय से इनके नाटकों में 'सामाजिक सरोकार' विषय पर एम. फिल. किया है। ऐसे ही **डॉ. पंकज कपूर** ने समकालीन व्यंग्य सवेंदना विषय पर अपने पी. एच. डी. के शोध कार्य पर **कैलाश वाजपेयी,** चन्द्र त्रिखा, प्रेमविज, लीलाधर जगूड़ी, हरमहिन्द्र सिंह, सागर पण्डित और उनके साथ ओम्प्रकाश सारस्वत को भी अपने आलोच्य कवियों में शामिल किया है। जिसमें हमारे लेखक की व्यंग्य–क्षमताओं का उद्घाटन हुआ है। डॉक्टर कपूर का यह शोध–प्रबन्ध 'समकालीन हिन्दी कविता में, व्यंग्य संवेदना, अंकुर प्रकाश न्यू गुप्ता कलोनी, दिल्ली–01 से प्रकाशित है।

ऐसे ही डॉ. मीनाक्षी शर्मा ने हिमाचल की 'आधुनिक हिन्दी कविताओं में समकालीन बोध' अपने शोध प्रबन्ध के कवियों में एक सशक्त कवि के रूप में डॉक्टर सारस्वत को शामिल किया है। इसमें वर्तमान समय की विसंगतियों, प्राप्तियों, अनुकूलताओं, प्रतिकूलताओं सभी सामाजिक परिप्रेक्ष्यों में उद्घाटित किया है। हमारे आलोच्य साहित्यकार का समकालीन लेखन में एक सम्मान–जनक स्थान है। इनके उपर किए गए पूर्ववर्त्ती कार्य इनके साहित्य के उद्देश्य को विभिन्न दायरों में व्याख्यायित करते हैं। मैं अपने आलोच्य लेखक की कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध एवं अन्य आलोचकीय क्षमताओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की

चेष्टा करुंगी जिससे हमारे इस साहित्यकार की लेखन, चिंतन एवं मनन की दृष्टियों को समक्ष लाया जा सके। डॉक्टर सारस्वत के लेखन को पढ़कर और उस पर सोचते हुए कई समसामयिक सरोकारों के साथ साक्षात्कार होता है। और लेखकीय उद्देश्यों के संदर्भ में भारतीय संस्कृति, उसके मूल्यों उसकी अवधारणा का ज्ञान भी होता है। हमारे साहित्यकार की लेखन शैली और विषय प्रतिपादन किसी भी सच्चे अध्येता को अपनी और आकर्षित करने में समर्थ है। मैं भी जब इनके साहित्य से रू–ब–रु हुई तो लगा कि इस साहित्यकार पर भी शोध कार्य हो सकता है, जो आज के संदर्भ में उपयोगी रहेगा। मैंने इसी विचार से, साहित्यकार सारस्वत के साहित्य में 'नारी' को विषय बना कर अपना यह कार्य करने का निर्णय लिया। आशा है आप गुरुओं की कृपा दृष्टि और निर्देशानुसार यह बड़ा कार्य, पूरा हो सकेगा।

शोध की विधि

हिन्दी में शोध कार्य को जैसा एक विश्वविद्यालय कराता है, करीब– करीब वैसे ही दूसरा विश्वविद्यालय भी मेरे इस शोध की शैली इस प्रकार रहेगी। पहले मैं अपने साहित्यकार की पुस्तकों को गम्भीरतापूर्वक पढ़कर उनकी संक्षिप्त प्रस्तावना दूंगी, और फिर अध्याय क्रम से कविता, कथा, नाटक, निबंध तथा अन्य समीक्षात्मक, सांस्कृतिक लेखन पर तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत करुंगी। मेरा यह शोध कार्य, सात अध्यायों में आयामित रहेगा। और अन्त में उसे समेकित करते हुए समाहार प्रस्तुत किया जाएगा। अंत में पुस्तक सूची के अतंर्गत लेखक की मूल पुस्तकों तदनन्तर सहायक ग्रन्थों पत्र–पत्रिकाओं, कोश ग्रन्थों, हिन्दी अंग्रेजी की सूची रहेगी; फिर हमारे साहित्यकार हमारे परिचय के दायरे में हैं इसलिए उनसे समय–समय पर गुत्थियों को सुलझाने में भी सहायता प्राप्त हो सकेगी। हमारे साहित्यकार ने विविध विषयों पर लेखन किया है। अतः लेखन पर एक अच्छा खासा साक्षात्कार भी किया जाएगा। जिससे हमारे तथ्यों की एक तो प्रमाणिकता पुष्ट होगी और दूसरे साहित्य के सम्बंध में उनके विचारों से भी अवगत हुआ जा सकेगा। मैं अपने अध्ययन को व्यापक और सारगर्भित बनाने हेतु पूरा प्रयत्न करूंगी।

शोध कार्य की रुपरेखा

अध्ययन की स्पष्टता और सुविधा के लिए विषय को कुछ शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित करके अध्ययन क्रम को आगे बढ़ाने की परम्परा है। मैं भी इसी परिपाटी के अनुसार अपने शोध– कार्य को पूर्ण करुंगी। मेरे आलोचय साहित्यकार के लेखन का दायरा विस्तृत है, उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं जैसे कहानी, नाटक, निबंध आदि का सृजन किया है, परिणामस्वरुप इन सभी विधाओं की मूल दृष्टि को उजागर करना मेरा लक्ष्य रहेगा। मेरे अध्ययन की विधि का क्रम अभी इस प्रकार से रहेगा।

अध्यायक्रम

पहला अध्याय

(क) व्यक्तित्व विश्लेषण

ओम्प्रकाश सारस्वत का 'व्यक्तित्व विश्लेषण' इस अध्याय में होगा, जहां आलोच्य साहित्यकार के जीवन से सबंधित उसकी अध्ययन–प्रवृत्ति, बचपन की रूचियां तथा परिचय रहेगा। हमारे साहित्यकार की लेखन की ओर रुचि, कैसे अग्रसर हुई। उसके अपने अध्ययन अध्यापन से, उसे कितना योगदान मिला तथा उसके परिवार के प्रोत्साहन तथा साहित्यक मित्रों की प्रेरणाओं का वर्णन रहेगा।

इस अध्याय में मुख्यतः परिवारिक व्यक्तित्व और साहित्यक व्यक्तित्व इन दो बिन्दुओं के अन्तर्गत मेरे लेखन की प्रस्तुति रहेगी।

(ख) कृतित्व परिचय

इस अध्याय में हम अपने साहित्यकार की लेखन विधाओं पर प्रकाश डालेंगे।

कविता– डॉ. ओम्प्रकाश के हिन्दी में छह कविता संग्रह हैं पहला, **'एक टुकड़ा धूप',**[1] दूसरा, **'शब्दों के सम्पुट में',**[2] तीसरा, **'दिन गुलाब होने दो,'** [3]

---

[1] आर्य बुक डिपो, करोलबाग, दिल्ली, 1979
[2] राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली, 1990
[3] निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, 2004

चौथा, **'खुशबुओं को बचाए रखिए',**[4] पांचवा, **'अनुष्ठानों के घटकलश'**[5] और छठा, '**कविता होते एहसास'** हैं। इन सभी पुस्तकों की समेकित दृष्टि, परम्परा से हटकर पुरानी गली– सड़ी मान्यताओं से उपर उठकर नई चेतना और सोच को विस्तारित करने की प्रशस्त चेष्टा है। इनका पहला कविता संग्रह–**एक टुकड़ा धूप,** तथा **दिन गुलाब होने दो,** भाषा, कला, संस्कृति अकादमी हिमाचल प्रदेश से प्रथम पुरस्कार से सम्मानित है। संग्रह में व्यंग्य, लक्षणा ध्वनि तथा भाषा के नूतन प्रयोग संग्रहों को पठनीय बनाते हैं।

डॉ. ओमप्रकाश का संस्कृत लेखन में भी नाम है। उनकी रचना की विशेषता है कि वह 'स्व' से 'इतर' और 'निज' से 'पर' तथा 'आत्म' से 'अनात्म' होने का प्रयत्न है । संस्कृत काव्य संग्रह की कविताएं अपने सम्प्रत्ययों, भाव–भूमि और कल्पना के संदर्भों में, राष्टीय सोच को सम्पुष्ट करने वाली कविताएं हैं। आधुनिक संस्कृत लेखन में डॉ. ओम्प्रकाश की दृष्टि ताजा और विश्वसनीय है। इस संग्रह की 'लेह लद्दाखीयम्' खण्ड काव्य में एक नई कविता– सोच को प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण आधुनिक संस्कृत कविता में यह अपनी तरह का एक विशिष्ट काव्य है। दो पद देखे जा सकते हैं–

1. लेहनात् लेह इत्युक्तः, प्रतिभागं क्षुपामिव।

लिहन्ति ज्ञानविन्दूश्चं, शान्ति सिन्धूश्चं साधकाः।।

2. कुल्याः कन्या इवाभान्ति, विहरन्ति, वहन्ति च।

लसन्ति, चापि लज्जाढ्याः गिरिजेव, हिप्रांगणे।। 43.

---

[4] राजेश प्रकाशन, दिल्ली, 2013

[5] सूर्यप्रभा प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, 2018

नाटक

नाटक साहित्य में भी हमारे साहित्यकार का प्रभूत योग है। इन्होंने कई लघु नाटकों की रचना के साथ पूर्ण मंचीय नाटकों का भी सृजन किया है। डॉ. सारस्वतः ने आकाशवाणी के लिए तथा मंच के लिए दोनों तरह के नाटक रचे हैं। **'गई भैंस पानी में** और **हमसे बढ़कर कौन**,[6] इनके ये दोनों धारावाहिक 13–13 किश्तों के रेडियो धारावाहिक हैं। इनके ये दोनों सीरियल आकाशवाणी शिमला से कईं बार प्रसारित हुए और लोकप्रिय हुए। डॉक्टर सारस्वत के नाटकों की मूल संवेदना, सामाजिक समस्याओं/सरकारों से जुड़कर उन्हें आधुनिक सोच से जोड़ती है। इनकी नाट्य भाषा तथा दृश्यांकन, मंचानुकूल तथा दशर्कों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले होते हैं।

सामाजिकों की चेतना को झकझोरने वाले इनके चार नाटक/संग्रह हैं। जिनमें–

1. चाहों के मंदार
2. सच्चाइयों के बीच
3. हमसे बढ़कर कौन और
4. गई भैंस पानी में

यह संग्रह, समाज की अनेक विसंगतियों को उद्घाटित करते हुए एक स्वस्थ सामाजिक चेतना को अग्रसरित करते हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. सारस्वत ने संस्कृत और पहाड़ी में भी नाटक लिखे हैं। इनके पहले नाटक–संग्रह 'चाहों के मन्दार' को हिमाचल, कला, भाषा संस्कृति, हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

कहानी

इनका एक कहानी संग्रह 'सम्बोधनों के बहाने' है जिसमें सोलह कहानियां हैं। कहानियों के विषय, वर्तमान समाज की समस्याओं को विवेचित करते हुए उनके

---

[6] सूर्यप्रभा प्रकाशन, दिल्ली

वास्तविक कारण संदर्भों को प्रस्तुत करते हैं। कहानियों में नारी केन्द्रित कई प्रभावशाली कहानियां हैं। ये कहानियां अपनी भाषा– शैली और प्रस्तुतिकरण में पठनीय ही नहीं अपितु पाठ्क के मन में एक चिंतन का भाव भी छोड़ जाती हैं। प्रायः सभी कहानियों में नारी सशक्तिकरण की चेतना बराबर विद्यमान हैं।

निबन्ध

डॉ. सारस्वत के चार निबन्ध संग्रह हैं। जिनमें 'महातरु और मेघमन' ललित निबंध संग्रह, तथा **आशीर्वाद ही आशीर्वाद,**[7] व्यंग्य निबंध/संग्रह हैं। दोनों निबंध संग्रहों की लालित्य और व्यंग्य चेतना रुचिकर ही नहीं, अपितु एक नए भाषा संस्कार और चिंतन को भी प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त डॉ. सारस्वत के 'भाषा साहित्य और संस्कृति' निबन्ध संग्रह में इसके नामानुरुप ही निबंधों की विषयवस्तु है। इसमें साहित्य सामग्री और शोध के लिए उपयोगी विषय हैं। इसके अतिरिक्त 'सूफी संत सांई बुल्लेशाह' और भारतीय संस्कृति पर भी पाठकों को अध्यात्म के आलोक से परिचित कराया है जो रुहानी साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए एक उपयोगी पुस्तक है। पुस्तक, अध्यात्म द्वारा वसुधैव कुटुम्बकम् , की भावना को बल देती है।

सभी निबन्धों में नारी, अपनी सत्ता और अस्मिता के इर्द–गिर्द ही व्यवहार करती दिखाई देती है।

---

[7] सूर्यप्रभा प्रकाशन, दिल्ली, 2017

अध्ययन की रुपरेखा

पहला अध्याय : साहित्यकार का व्यक्तित्व और कृतित्व

(1) पारिवारिक व्यक्तित्व

(2) बचपन

(3) छात्र जीवन

(4) रुचियां

1. साहित्यिक व्यक्तित्व

(1) साहित्यिक अभिरुचि का विकास

(2) स्कूली जीवन के साहित्यिक कार्यक्रम

(3) सांस्कृतिक कार्यक्रम

(4) प्रथम यादगारी साहित्यिक समारोह

(5) दशम कक्षा का विदाई समारोह

(6) लेखन में प्रवृत्ति

दूसरा अध्याय : हिन्दी कविता लेखन में नारी रूप

(1) एक टुकड़ा धूप

(2) शब्दों के सम्पुट में

(3) दिन गुलाब होने दो

(4) खुशबुओं को बचाए रखिए

(5) अनुष्ठानों के घट कलश

(6) कविता होते साक्ष्य हिन्दी कविता में नारी–रुप

1. संस्कृत कविता में नारी

(1) कवितान्तरम्

(2) संस्कृत कविता में नारी का महत्व

तीसरा अध्याय : हिन्दी नाटकों में नारी की भूमिका

(1) चाहों के मन्दार, (छह नाटकों का समूह, पुरस्कृत)

(2) सच्चाइयों के बीच, (दो नाटकों का संग्रह)

(3) गई भैंस पानी में– (13 किश्तों का रेडियो धारावाहिक)

(4) हम से बढ़कर कौन– (13 किश्तों का रेडियो धारावाहिक)

(5) लक्ष्मी की डिबिया – (5 बाल नाटकों का संग्रह)

(6) बदलते मूल्य और आधुनिक नाटक

चौथा अध्याय : संस्कृत नाटकों में नारी की भूमिका

(1) संगच्छध्वम्– (5 संस्कृत नाटकों का संग्रह)

(2) भूमिपुत्रम्

पांचवा अध्याय : कहानियों में नारी

(1) सम्बोधनों के बहाने (16 कहानियों का संग्रह)

छठा अध्याय : निबन्ध साहित्य में नारी की सत्ता

(1) महातरु और मेघमन, (ललित निबंध संग्रह)

(2) आशीर्वाद–ही–आशीर्वाद, (व्यंग्य निबंध संग्रह)

(3) भाषा साहित्य और संस्कृति, (सांस्कृतिक निबन्ध)

(4) सूफी संत कवि, बुल्ले शाह

छठा अध्याय

(1) ओम्प्रकाश सारस्वत की रचनादृष्टि

(2) डॉ. सारस्वत का साहित्य में नारी के प्रति दृष्टिकोण

सातवां अध्याय

(1) साहित्यकार से साक्षात्कार

(2) समाहार

ग्रन्थ परिचय

(1) मूल ग्रन्थ

(2) सहायक ग्रन्थ

(3) पत्र–पत्रिकाएं

(4) कोष ग्रन्थ

हिन्दी

संस्कृत

अंग्रेजी

उर्दू